मक्सिम गोर्की

करोड़पति कैसे होते हैं

करोड़पति लोगों की कल्पना से अक्सर मुझे मानसिक परेशानी होती रही है। यह बात मेरी समझ तथा यकीन में भी नहीं आ पाती थी कि इतनी अधिक दौलत के मालिक किस तरह एक साधारण आदमी की तरह रहते-सहते होंगे।

मैं सोचा करता था कि हर करोड़पति इन्सान के तीन मेदे होते होंगे और उसी अनुपात में उसके मुंह में लगभग डेढ़ सौ दांत भी होंगे। मुझे यकीन था कि एक करोड़पति दिन भर खाता रहता होगा, 6 बजे प्रात: से आधी रात तक, और उसके खाने के सामान बड़े कीमती होते होंगे। दिन भर खाते-खाते शाम के वक्त उसके जबड़े इस तरह थक जाते होंगे कि वह अपने सेवकों को आदेश देता होगा कि वे उसके लिए निवाले चबायें, और फिर वह उनके चबाये हुए निवालों को निगलता होगा, और थक कर जब वह बेजान हो जाता होगा तो उसकी सांसों की रफ्तार तेज हो जाती होगी और वह पसीने से सराबोर हो जाता होगा, तब उसके सेवक उसे बिस्तर पर लिटा देते होंगे।

दूसरी सुबह बिस्तर से उठते ही वह अपने इस थका देने वाले कार्यक्रम के अनुसार अपना दैनिक काम शुरू कर देता होगा, लेकिन इतनी सुख-सुविधा से रहने के पश्चात भी वह अपने मूलधन के ब्याज का 50 प्रतिशत भी अपने ऊपर नहीं खर्च कर पाता होगा। मेरी समझ में ऐसा जीवन मुसीबतों से भरा हुआ होता होगा। लेकिन क्या किया जाये! एक करोड़पति अगर मामूली आदमी की तरह खाये-पीये तो उसके करोड़पति होने का क्या फायदा?

मैं सोचा करता था कि उसके पहनने के कपड़े सोने के तारों से बने होते होंगे। उसके जूते के तल्ले सोने की कीलों से लैस होंगे। मामूली हैट के बजाय वह कीमती हैट पहनता होगा जिसमें हीरे टंके हुए होंगे। निहायत ही कीमती कपड़े से उसका जैकेट तैयार होता होगा जो कम से कम पचास गज लम्बा होगा और उसी लिहाज से उसमें कम से कम तीन सौ सोने के बटन टंके होंगे। खास-खास अवसरों पर वह आठ जैकेट और पतलूनों के आठ जोड़े पहनता होगा, यह पहनावा भोंडा और तकलीफदेह तो जरूर होता होगा, लेकिन क्या किया जाये! एक दौलतमन्द आदमी आम आदमियों का लिबास तो नहीं पहन सकता! करोड़पति की जेब के बारे में मेरा ख्याल था कि वह इतनी बड़ी होती होगी कि उसमें मेम्बरों सहित एसेम्बली की सारी इमारत और जरूरत की दूसरी बहुत सारी चीजें समा सकती होंगी।

अब जबकि मुझे विश्वास हो चला था कि उसके मेदे की गुहा का विस्तार किसी समुद्री जहाज के पेंदे के बराबर होगा तो मेरे लिए यह अनुमान लगाना मुश्किल हो गया कि उसकी टांगें कितनी लम्बी होंगी और उसकी पतलून की लम्बाई, चौड़ाई कितनी होगी। इसी प्रकार मैंने यह फर्ज कर लिया था कि जिस लिहाफ को वह ओढ़ता होगा उसका विस्तार कम से कम एक वर्ग मील तो जरूर होगा। अगर वह तम्बाकू का आदी होगा तो तम्बाकू भी निहायत उम्दा किस्म का होता होगा और एक समय में कम से कम दो पौंड तो जरूर लेता होगा और अगर नास सूंघने की आदत होगी तो कम से कम एक चुटकी में एक पौंड तो जरूर सूंघ लेता होगा। आदमी के पास तो दौलत इसीलिए होती ही है कि उसका अधिक से अधिक इच्छानुसार उपयोग किया जाये।

एक करोड़पति के हाथों की अंगुलियां भी गैर मामूली तौर पर लम्बी होती होंगी और न सिर्फ लम्बी होती होंगी बल्कि कई करतब भी दिखा सकती होंगी। मसलन न्यूयार्क से उसकी आंखें अगर यह देख लें कि सायबेरिया में एक डालर का पौधा उग रहा है तो वह बेहिचक अपना हाथ बढ़ा देता होगा जो बेरंग स्ट्रीट से गुजरता हुआ सायबेरिया पहुंच जाता होगा, और इस तरह अपनी जगह से टस से मस हुए बगैर वह अपने प्रिय पौधे को तोड़ लेता होगा।

इतना कुछ सोचने के बावजूद मेरे दिमाग में यह बात नहीं आ पा रही थी कि उसका सिर कैसा और कितना बड़ा होगा, और अंत में मैंने यह महसूस कर लिया कि उसे सिर की जरूरत नहीं होनी चाहिए। सिर तो मांस और हड्डियों का एक ढेर है जो हर वस्तु से सोना निचोड़ना चाहता है। इस प्रकार एक करोड़पति के सम्बन्ध में मेरी कल्पना कुछ बहुत स्पष्ट नहीं थी। इस बारे में मैं सिर्फ इतना ही सोच और समझ पाया था कि एक करोड़पति के दो लम्बे-लम्बे हाथ होते हैं जिन्होंने सारी दुनिया को अपने घेरे में ले रखा है, और उसे एक अन्धेरी भयानक गुफा

के मुंह पर रख दिया है जो उसे चूस रहा है, कुतर रहा है, चबा रहा है, मानो वह एक गर्म भुना हुआ आलू हो।

एक करोड़पति के सम्बन्ध में ये थे मेरे ख्यालात। लेकिन इन्हीं दिनों जब मेरी मुलाकात सचमुच में एक करोड़पति से हुई तो मैंने देखा कि वह एक साधारण इन्सान से किसी भी हालत से बेहतर नहीं है। अब मेरे आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही। मेरे सामने एक व्यक्ति आरामकुर्सी पर बैठा हुआ था। उसका कद लम्बा, चेहरा भावशून्य और सूखा हुआ था। उसके हाथ उतने ही लम्बे थे जितने आम आदमियों के हुआ करते हैं। अपने दोनों हाथों को जिनमें झुर्रियां पड़ चुकी थीं वह बड़े इत्मीनान से अपने पेट पर रखे हुए थे। अपने फूले-फूले गालों की हजामत उसने बड़े हिफाजत से की थी। उसका नीचे का होंठ खुला हुआ था और नकली दांतों का सेट जो सोने का बना हुआ था साफ दिखलाई दे रहा था।

ऊपर का होंठ दांतों से चिपटा हुआ था और बातचीत करते समय बड़ी कठिनाई से हिल-डुल सकता था, उसकी निस्तेज आंखों के ऊपर कोई ऐसी चीज नहीं थी जिसे भौंह कहा जा सके। खोपड़ी की त्वचा साफ थी और बालों से बिलकुल खाली चेहरा लाली लिए हुए निस्तेज और चिकना था, ठीक एक नवजात बच्चे के समान, उसे देखकर यह अनुमान करना कठिन था कि वह अभी-अभी पैदा हुआ है या इस दुनिया से कूच करने की तैयारी कर रहा है। उसका पहनावा भी एक मामूली आदमी के समान था। सोना सिर्फ उसकी अंगूठी, घड़ी और दांतों में था, जिसका सम्मिलित भार अधिक से अधिक आधा पौण्ड होगा। संक्षेप में ये कि उसका हुलिया यूरोप के किसी रईस खानदान के एक बूढ़े सेवक से किसी भी हालत में बेहतर नहीं था। मैंने जिस कमरे में उससे मुलाकात की थी उसकी सजावट और सुन्दरता के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। हां, इतना जरूर कहा जा सकता है कि फर्नीचर साधारण तौर पर लम्बे-चौड़े थे जिन्हें देखकर यह अनुमान होता था कि इसमें गाहेबगाहे हाथी भी आते रहे होंगे।

मेरी आंखों को यह विश्वास नहीं हो पा रहा था कि यह व्यक्ति करोड़पति हो सकता है। इसलिए अपने-आपको विश्वास दिलाने के लिए मैंने उससे पूछा—"क्या आप करोड़पति हैं?"

"जी हां", उसने विश्वास के साथ सिर हिलाते हुए कहा। मुझे उसकी बातों पर विश्वास है, यह दिखाते हुए मैंने उसके झूठ को बेपर्दा करने की कोशिश करते हुए कहा—"आप कितना गोश्त खाते होंगे?"

"मैं गोश्त बिल्कुल नहीं खाता" उसने जवाब दिया—"नारंगी की सिर्फ एक फांक, एक अण्डा, चाय की एक छोटी-सी प्याली, बस यही है मेरी खुराक!"

उसकी बच्चों की-सी भोली आंखों में एक चमक-सी पैदा हुई, मुझे उसकी आंखों में झूठ का कोई भाव नजर नहीं आया, इस पर मुझे हैरत भी हुई और परेशानी भी।

"बहुत खूब," मैंने बातचीत का सिलसिला जारी करते हुए कहा, "कृपया ईमानदारी से बताइये कि आप दिन भर में कितनी बार खाते हैं?" "सिर्फ दो बार", उसने जवाब दिया, "एक बार नाश्ता करता हूं, फिर दिन का खाना खाता हूं, बस इतना मेरे लिए काफी है। खाने में एक प्लेट शोरबा, मुर्गी या बतख का थोड़ा-सा गोश्त, जरा-सी मिठाई, कुछ फल और एक सिगार।"

मेरा आश्चर्य बढ़ता जा रहा था, और वह करुण दृष्टि से मेरी तरफ देखे जा रहा था।

दम लेने के लिए मैं थोड़ी देर रुक गया, उसके बाद मैं उससे यूं बोला—

"अब तक आपने जो कुछ बताया है अगर वह सही है तो उन रुपयों का क्या काम जो आपकी तिजोरी में बंद हैं?"

उसने अपने कंधों को धीरे से हिलाया, जवाब देते समय उसकी आंखों की पुतलियां नाच गईं। उसने कहा—"मैं उन रुपयों को अधिक रुपया पैदा करने के लिए इस्तेमाल करता हूं।"

"किसलिए?" मैंने पूछा, "ताकि और ज्यादा रुपये कमा सकूं।"

"वह किसलिए?" मैंने उत्सुकता से पूछा।

उसने अपनी कोहनियां आरामकुर्सी के हत्थे पर रख लीं, और गर्दन जरा-सी आगे बढ़ा दी, उसके चेहरे पर मुझे एक हल्की-सी उत्सुकता और परेशानी-सी नजर आयी। उसने राजदाराना लहजे से मुझसे पूछा—"क्या तुम पागल हो?"

"क्या आप पागल है?" मैंने भी उसी अन्दाज में उसे जवाब दिया।

बूढ़े ने अपनी गर्दन झुका ली और उसके सुनहले दांतों से धीमी-धीमी आवाज आने लगी। "अजब दिलचस्प आदमी है, ऐसे आदमी से शायद ही मुलाकात हुई हो।" फिर से उसने अपनी गर्दन उठाई और अपने मुंह को कानों तक ले जाते हुए बड़ी खामोशी के साथ मेरा निरीक्षण करना शुरू किया। उसके शांत रवैये से पता चलता था कि उसे अपने नार्मल होने का पूरा विश्वास है। मेरी नजर उसकी टाई पर पड़ी जिसमें पिन से हीरे का छोटा-सा टुकड़ा टंका हुआ था। मैंने दिल में सोचा कि हीरे का यह टुकड़ा अगर एड़ी के नाप का होता तो शायद मैं अन्दाजा कर सकता था कि वास्तव में मैं कहां हूं।

"अच्छा आप अपनी जोत से क्या काम लेते हैं?" मैंने पूछा।

"रुपये बनाता हूं" उसने अपने कंधों को हिलाते हुए कहा। मैंने कहा, "आप रुपये किस तरह कमाते हैं?" "निहायत आसान तरीका है। खेत अपना है। किसान जो कुछ पैदा करता है उसे बाजारों में भेज देता हूं सिर्फ इतना हिसाब रखना पड़ता है कि किसानों को कितना दिया जाये कि वो भूखों न मरने पायें और कम से कम इस हाल में रहें कि अनाज पैदा कर सकें। इसके बाद जितना भी बच रहता है उसे रेलवे का किराया काट कर अपनी जेब में डाल लेता हूं। निहायत ही आसान तरीका है।"

"क्या किसान इससे सन्तुष्ट हो जाते हैं?" "सब नहीं", उसने बच्चों की-सी सादगी से जवाब देते हुए कहा, "कुछ लोग ऐसे हैं कि वो कभी भी सन्तुष्ट नहीं हो सकते। गिले-शिकवे की बात नहीं, वे आदतन ऐसे ही होते हैं।"

"क्या सरकार तुम्हारे कामों में हस्तक्षेप नहीं करती," मैंने अविश्वासपूर्वक उसे देखते हुए पूछा। "सरकार!" उसने इस शब्द को दोहराते हुए चिन्ता प्रदर्शित करते हुए अपनी अंगुलियां माथे पर फेरीं। उसने वार्तालाप इस तरह छोड़ दिया जैसे एकाएक उसके दिमाग में कोई बात आ गई हो। "अच्छा तुम्हारा मतलब उन लोगों से है जो वाशिंगटन में रहते हैं। नहीं, वो मुझे परेशान नहीं करते, वो तो बड़े अच्छे नौजवान है। उनमें से कई तो मेरे क्लब के मेम्बर हैं—मुलाकातें बहुत कम होती हैं, लिहाजा अक्सर उन्हें भूल जाता हूं।

नहीं-नहीं, वो मेरे कामों में जरा भी हस्तक्षेप नहीं करते।"

उसने आश्चर्य से मेरी ओर देखते हुए पूछा, "क्या तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि कुछ हुकूमतें ऐसी भी हैं जो लोगों को रुपया कमाने से दूर रखना चाहती हैं?" इस सवाल पर मुझे अपने भोलेपन का अहसास हुआ और साथ-साथ उसकी अकलमंदी का भी।

"नहीं!" मैंने नर्मी से कहा, "मेरा इरादा ये हरगिज नहीं था। मैं तो सिर्फ ये कहना चाहता था कि सरकार का ये कर्तव्य होना चाहिए कि वो दिन-दहाड़े डकैती से लोगों को दूर रखें।"

"ओ हो!" उसने एतराज करते हुए कहा, "ये तो सरासर ज्यादती है। यहां ऐसा नहीं होता। सरकार को क्या हक है कि वो हमारे निजी मामलों में हस्तक्षेप करे।" उसकी बचकानी अकलमंदी देखकर मेरी जिज्ञासा बढ़ने लगी, इसलिए बड़ी नम्रता से मैंने पूछा "जब एक व्यक्ति बहुत से लोगों का तबाह कर रहा हो तो क्या उसे निजी मामला समझना चाहिए?"

"तबाह?" उसने अपने दीदों को फैलाते हुए कहा, "अरे तबाही तो तब होगी जब मजदूरी बढ़ा दी जाये या किसी तरह हड़ताल हो जाये। यहां तो ये हालत है कि लोग अपने-अपने कस्बे और बस्तियां छोड़ कर हमारी तरफ चले आ रहे हैं। नये लोगों के आने का तांता बंधा हुआ है। उनके आने से मजदूरी की दर भी कम होती जा रही है। और हड़तालियों की जगह भी भरती जा रही है। मुल्क में जरूरतमंदों की तादाद जब ज्यादा हो वह आप ही आप कम मजदूरी पर काम करने लगेंगे और ज्यादा चीजें खरीदेंगे। इस तरह मामला निहायत खूबी के साथ सुलझ जायेगा।" उसमें जिन्दगी का थोड़ा उबाल जाहिर हुआ। पहली नजर में मैंने कुछ ऐसा महसूस किया था कि वो बच्चे और बूढ़े के बीच की कोई चीज है। लेकिन अब ये तुलना बहुत कम हो चुकी थी।

उसकी पतली-पतली अंगुलियां और उसकी साफ आवाज मेरे कानों में आने लगी। "हुकूमत बड़ा दिलचस्प सवाल है। एक अच्छी हुकूमत का होना जरूरी है। ऐसी हुकूमत जो हमारी जरूरियात का ख्याल रख सके, वो देश में केवल उतने आदमियों को रहने की इजाजत दे जो मेरे जरूरत के अनुसार हों ताकि मैं जो कुछ चाहूं उन्हें बेच सकूं। मजदूरों की तादाद भी इतनी हो कि मैं अपने कारोबार में किसी प्रकार की दिक्कत न महसूस करूं। बस इतना काफी है।"

मैं उठने लगा। "ओ हो, तुम जा रहे हो?" उसने पूछा।

"हां", मैंने जवाब दिया, "लेकिन इसके पहले कि मैं आपसे अलग होने की इजाजत चाहूं, मुझे ये बता दीजिए कि करोड़पति बनने का क्या अर्थ है?"

अबकी जवाब देने के बजाय उसने हिचकियां लेनी शुरू कर दीं। अपनी टांगों को हिलाने लगा। शायद वो इसी अंदाज में हंसा करता था। अपनी सांसों को मजबूत करते हुए उसने कहा, "ये तो सिर्फ एक आदत है।"

मैंने फौरन पूछा, "आदत क्या है?"

"करोड़पति बनना, यह तो एक आदत है।"

कुछ क्षण सोचते रहने के बाद मैंने उससे एक आखिरी सवाल किया।

"तो आपका ख्याल है कि खानाबदोश, अफीमची और करोड़पति एक ही कबीले के लोग हैं।"

मेरे सवाल से उसे जरूर रंज पहुंचा होगा क्योंकि उसकी आंखें गोल हो चुकी थीं, जिनमें उनकी पुतली का सब्ज रंग झांकने लगा था।

"शायद तुम्हारा पालन-पोषण सभ्य ढंग से नहीं हुआ है।" उसने भिन्ना कर कहा।

"नमस्कार!" मैंने रवाना होते हुए कहा। बड़ी नम्रता से वो मुझे सीढ़ियों तक पहुंचाने आया और कुछ देर तक सीढ़ियों पर खड़ा अपने जूतों को घूरता रहा। उसके मकान के सामने एक लान था, जिसमें घनी घास उगी हुई थी जिसे बड़ी सफाई के साथ कांट-छांट कर बराबर किया गया था।

मैं इसी लान से बड़ी बेचैनी के साथ गुजर रहा था और दिल ही दिल में सोच रहा था कि अब दुबारा इस व्यक्ति से हरगिज नहीं मिलूंगा। इसी समय मेरे पीछे से कानों में एक आवाज गूंजी, "हैलो!"

मैंने मुड़कर देखा, वो सीढ़ियों पर खड़ा मुझे गौर से देख रहा है। "क्या तुम्हारे देश में यानी यूरोप में जरूरत से ज्यादा बादशाह हैं?" उसने राजदाराना लहजे में मुझसे पूछा।

"अगर आप मुझसे पूछते हैं तो साफ-साफ कहता हूं कि हम लोगों को किसी बादशाह की बिलकुल जरूरत नहीं।" मैंने जवाब दिया।

उसने मुड़कर देखा और फिर कहने लगा कि मैं बादशाहों का एक जोड़ा किराये पर अपने लिए मंगवाना चाहता हूं। तुम्हारा क्या ख्याल है।"

"लेकिन किसलिए?"

"दिल बहलाने के लिए मैं उन्हें अपने यहां लाता और उन्हें हुक्म देता कि मेरे सामने बाक्सिंग करें।" उसने अंगुलियों से मैदान की तरफ इशारा करते हुए कहा और फिर कहने लगा कि "एक डेढ़ बजे तक उनसे बाक्सिंग करवाता। खाना खाने के बाद आधे घंटे का ये बहुत अच्छा मनोरंजन रहेगा।"

मैंने महसूस किया कि उसका इरादा पक्का है और इसे पूरा करने के लिए सब कुछ कर सकता है।

"लेकिन इस काम के लिए बादशाहों की क्या जरूरत?"

मैंने पूछा—"क्योंकि यहां आज तक किसी को ये बात नहीं सूझी।" उसने अपने इरादे का निचोड़ पेश करते हुए कहा।

मैंने कहा—"बादशाह तो खुद इस बात के आदी हैं कि दूसरे उनके लिए लड़ा करें।" ये कहकर मैं आगे बढ़ा।

"हैलो!" उसने फिर मुझे आवाज दी।

मैं फिर रुक गया। वो अभी तक अपनी जेबों में हाथ डाले वहीं खड़ा था। उसकी आंखें और चेहरे जैसे एक स्वप्न सा देख रही थीं।

"अब क्या?" मैंने पूछा।

उसने अपने होंठ इस तरह हिलाये जैसे कुछ चबा रहा हो। उसके बाद राजदाराना लहजे में कहने लगा—"तुम्हारा क्या अंदाज है, अगर दो बादशाहों से रोजाना आधे घण्टे तीन महीने तक बाक्सिंग करायी जाये तो क्या खर्च होगा? ओह! बादशाहों की बाक्सिंग! बड़ा मजा आयेगा!" वह बच्चों की तरह दाहिने हाथ की मुट्ठी को बायीं हथेली पर पटकता सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ वापस कमरे में लौट गया।

मैं फिर एक मिनट भी वहां नहीं रुका और तेजी से लान पार करता हुआ फाटक से बाहर आ गया।

●